Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

जाति गायन विधा: कैशिकी के परिप्रेक्ष्य में

DR. GIAN CHAND

Associate Professor (Muisc) Govt. College Dhami, Shimla, Himachal Pradesh

सारांश

भारतीय संगीत का इतिहास अतिप्राचीन एवं समृद्ध रहा है, जिसका वर्णन हमारे प्राचीन ग्रन्थों में पर्याप्त रूप से मिलता है। भरत ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में जाति का पूर्ण रूप से तथा ग्राम राग का नामोल्लेख वर्णन किया है। ''भरत के काल में जो गान क्रिया प्रचलित थी, जिस प्रकार के गीत-प्रयोग नाट्य में व्यवहृत हुए, वे सब प्रयोग नाट्यशास्त्र में जाति के अन्तर्गत विभाजित किए गए है। जिस प्रकार पाणिनी ने अपने 'शब्दानुशासन' में संस्कृत भाषा के अन्तर्गत भारत के विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली बोलियों के शब्दों का भी संग्रह (समावेश) किया है उसी प्रकार भरत मुनि ने भी भारत और भारतेतर देश प्रदेशों में जो विशेष स्वर समूह प्रचार में होंगे, उन सब को एक ही जगह समाविष्ट करने के लिये और एक ही शास्त्र में नियमबद्ध करने के लिए जातियों का निरूपण किया है। यहां इस प्रकार का अनुमान भी हो आता है कि भारतीय और भारत के संपर्क में आई हुई भिन्न-भिन्न मानव जातियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप विशेष प्रचलित होंगें, उन्हीं स्वर रूपों को शास्त्रीय रूप देते समय उन्हें जाति संज्ञा देना शायद उचित समझा होगा क्योंकि भिन्न-भिन्न जातियों से वे स्वरावलियाँ सम्बन्धित रही होगी। सात शुद्ध व ग्यारह विकृत जातियों में कैशिकी जाति मध्यग्रामीय है जिसके विनियोग से कुछ अन्य जातियों की भी निष्पति होती है। इन्ही जातियों से ही ग्रामरागों का तत्पश्चात ग्रामरागों से आधुनिक प्रचलित रागों का प्रादुर्भाव हुआ।

भूमिका

रंजन और अदृष्य अभ्युदय को जन्म देते हुए विशिष्ट स्वर ही विशेष प्रकार के सन्निवेश से युक्त होने पर 'जाति' कहे जाते हैं। दस लक्षणों से युक्त विशिष्ट स्वर सन्निवेश 'जाति' कहलाता है।''[1]

भरत मुनि कहते हैं-

''यत्किंचद् गीयते लोके तत्सर्व जातिषु स्थितम्''[2]

भावार्थः- जो भी लोक में गाया जाता है वह सब जाति में स्थित है।

भरत की अपनी दी हुई 'जाति' की व्युत्पतिमूलक व्याख्या उपलब्ध नहीं होती, लेकिन इस विषय पर आगामी ग्रन्थकारों मतंगादि के वचनों से जो विदित होता है वह इस प्रकार हैः-

''श्रुतिग्रहस्वरादि समूहाज्जायन्त अतो इत्युच्यन्ते।''[3]

अर्थात श्रुतिग्रह स्वर आदि के समूह से जो जन्म पाती है उसे जाति कहते हैं।

नान्यदेव ने जाति के सम्बन्ध में कहा हैः-

''रस भाव प्रकृत्यादि विशेषप्रति पतयः। जायन्ते जातिभिव्र्यक्ता--।।

(भरत कोष पृ0 227)''[4]

अर्थातः- रस, भाव प्रकृति आदि की विशेष प्रतिपति जातियों से होती है।

दतिल ने जातियों की व्युत्पति के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा बल्कि उसके लक्षण और विकृतादि जातियों के निमार्ण का वर्णन किया है जैसेः

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

"षडजायामध्यमायाश्च संसर्गात षडज मध्यमा।

षड्जायास्त्वथ गान्ध्राया जायते षडजकैशिकी।।49।।"[5]

अर्थात षाड़जी तथा मध्यमा इन दोनों जातियों के संर्सग से षडजमध्यमा जाति बनती है - -।

संगीत पारीजात में भी अहोबल ने 'जाति निरुपणम्' में जाति का विस्तृत वर्णन नहीं किया, केवल सात शुद्ध जातियों के विषय में ही लिखा है। छः शुद्ध जातियों के नाम प्रस्तुत करने के बाद अहोबल कहते हैं-

"----सप्तमी स्यातु नैषादी तासांलक्ष्म च कथ्यते।

इमा वशस्वरे स्थित्वा यदि विलवितः ----।।266।।"[6]

शुद्ध जातियां

शुद्ध जातियां सात मानी गई हैं, जिनके नाम सप्त स्वरों पर रखें गए हैं यथा-

षाड़जी, आषर्भी, गान्धारी, मध्यमा, पंच्चमी, धैवती और नैषादी।

इन शुद्ध जातियों के लक्षण भरत ने इस प्रकार कहें हैं-

1. "अन्युनस्वराः अर्थात जिसका आरोअहावरोह संपूर्ण हो।
2. स्वस्वरांशग्रहन्यासः जिस स्वर पर जिस जाति का नाम रखा गया है वहीं स्वर उसका ग्रह, अशं और न्यास भी हो।
3. न्यासविधावप्यासां मन्द्रो नियमात् भवति शुद्धासुः अर्थात शुद्ध जातियों में न्यास स्वर नियम से मन्द्र में ही होना चाहिए।"[7]

मंतग मुनि कहतें हैं-

"----तत्रा जातयोऽष्टादशैव। एताः सर्वा-

-शभेदेन शतं चत्वारिशंदाद्यिकं संख्यया भवन्ति"[8]

अर्थातः- जातियां अठारहा है। ये अंश स्वर के भेद से संख्या में एक सौ चालीस हो जाती है।

मंतग ने जातियों के लक्षणों का विस्तृत वर्णन किया है, इन्होने जाति के सामान्य लक्षणों के अतिरिक्त दशविध लक्षणों का उल्लेख भी किया है। मतंग ने सात जातियां षड़ज ग्राम तथा ग्यारह जातियां मध्यग्राम से उत्पन मानी है। मंतगानुसानरः

"षाडजीचैवाषर्भी ---------- षडजमध्या तथा चैव षडजग्रामसमाश्रयाः।"[9]

षड्जग्रामिक जातियां-षाडजी, आषभी, धैवती, नैषादी, षडजोदीच्वया, षडजकैशिकी तथा षडजमध्या। उपरोक्त सात जातियों के अतिरिक्त अन्य ग्यारह जातियां को मध्यग्रामिक कहा है ये जातियां हैः-

गान्धारी, मध्यमा, पच्चमी, गान्धारीदीच्वया, गान्धारपच्यमी, रक्तागांधारी, मध्यमोदीच्वया, आंध्री, नंदयंती, कार्मारवी तथा कैशिकी।

विकृता जातियां

विकृत जातियों की संख्या ग्यारह बताई गई हैं।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

भरतानुसारः-

"एम्योऽन्यतमेन द्वाभ्यां बहुभिर्वा लक्षणेविक्रियामुपगता न्यासवर्ज विकृत संज्ञा भवन्ति"[10]

अर्थात शुद्ध जातियों के लक्षणों में से न्यास को छोड़ कर एक दो या उससे अधिक लक्षणों में विकार उपजनें से विकृता जाति बनती है। दतिलम् में उल्लेखित हैः

"जातयोऽष्टादश ज्ञेयास्ता सप्त स्वराख्यया।

शुद्धाश्च विकृताश्चैव शेषास्तत्सडकरोद्भवाः।।48।।[11]

अर्थात वे जातिया 18 जानिएं उन सप्त स्वरों की जातियों के शुद्ध और विकृत दो मुख्य रुप है, शेष उनके मिश्रण से बना करते है।

षाड़जी और गान्धारी के योग से षाड़ज कैशिकी, तथा

षाड़जी गान्धारी मध्यमा पंचमी धैवती नैषादी के योग से 'कैशिकी' जाति का निर्माण होता है। कैशिकी जाति के विषय में दतिलम् में आगे वर्णित हैः-

"कैशिकयामृष षोऽनंशो न्यासौ तु द्विश्रुति समृतौ।

ऋषभ धैवतश्चैव हेयावस्यां यथा क्रमम् ।।48।।"[12]

अर्थात कैशिकी जाति में ऋषभ को छोड़कर शेष स्वर अशं होते हैं, गान्धार निषाद पर न्यास होता है। इसके आरोह में ऋषभ तथा अवरोह में धैवत वर्जित है। अतः जाति षाड़व-2 है। दतिल ने जाति के औड़व-षाड़व प्रकार की व्याख्या करते समय कैशिकी जाति के धैवत के विषय में इस प्रकार कहा हैः-

"कैशिकयामथ पंचम्यां क्रमशो धैवत ऋषभों।

योज्यं सप्ताधिकेष्वेवं चत्वारिंशत्सु षाड़वे।।"[13]

भावार्थः- कैशिकी जाति में धैवत तथा पंचमी में ऋषभ 47 प्रकारों में प्रयुक्त करना चाहिए।

संगीत पारीजात में जातियों का विस्तृत वर्णन नहीं मिलता अपितु रागों के विषय में विस्तृत जानकारी दी है। 'जाति निरुपणम्' में अहोबल ने केवल सात जातियों के नाम दिए है यथाः-

"-----आद्या षड़जा तु विज्ञेया द्वितीया चाषर्भी ।।260।।

गान्धारी तु तृतीया सा चतूर्थी मध्यमापरा।

पंचमी पंचमी ज्ञेया षष्ठी तु धैवती पुनः।।---[14]

दामोदर कृत 'संगीत दपर्ण' में-जाति-लक्षण' के अन्तर्गत जातियों के लक्षण मात्रा ही गिनाएं है, उनका वर्णन नहीं किया गया यथाः

''ग्रहांशतारमंद्राश्च न्यासापन्यासकौ तथा।

अपि संन्यासविन्यासौ बहुत्वं चाल्पता ततः।।

एतान्यंतरमार्गेण सहलक्ष्माणि जातिषु।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

शाडवौडविते क्वापीत्वेवमाहुस्त्रायोदश॥66॥[15]

भावार्थः- ग्रह, अंश, तार, मन्द्र, न्यास, उपन्यास, सन्यास, विन्यास, बहुत्व, अल्पत्व।

के. वासुदेव शास्त्री कृत संगीतशास्त्र में जाति के उपरोक्त दस लक्षणों के अतिरिक्त विन्यास और अन्तमार्ग दो अन्य लक्षण कहें हैं। इन्होंने जाति के 12 लक्षणों का वर्णन किया है।

कैशिकी जाति की उत्पति व लक्षण

कैशिकी जाति छः जातियों के योग से निर्मित एक विकृत जाति है। इस जाति के निर्माण में केवल 'आर्षभी' जाति का ही मिश्रण नहीं है, अन्य छः शुद्ध जातियों का योग इसमे निहित है। यह जाति षाड़जी, गान्धारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती एवं निषादी के संसर्ग से बनती है।

भरत शब्दों में -

''कैशिकयास्तु तथा ह्यंशाः स्वे चैवर्षभ बिना।

एत एव ह्यपन्यासा न्यासौ गान्धारसप्तमौ॥

धैवतेऽशे निषादे च न्यासः पंचम इष्यते।

अपन्यासः कदाचितु ऋषभोऽपि विधीयतै॥

आर्षभ्यं षाड़वं चात्र धैवतर्षभवर्जिनम्॥

तथा चैड्डवितं कुयर्यात् बलिनौ चान्त्य पंचमौ॥

दौर्बल्यं ऋषभस्यात्र लघंनं च विशेषतः।

अंशवत्कल्पितश्चान्यैः षाडवे तु विधीयते।

षड़जमध्यांवदत्रापि संचारस्तु भवेदहि''[16]

अर्थातः- ऋषभ के अतिरिक्त अन्य सभी स्वर कैशिकी के अंश होते है, यही स्वर अपन्यास भी होते हैं। गान्धार और निषाद न्यास होते हैं। धैवत और निषाद अंश होने पर, पंचम न्यास होता है। कभी-कभी इस जाति में ऋषभ भी अपन्यास होता है। ऋषभ के लोप से इस जाति में षाड़व, ऋषभ धैवत के लोप से औड़व रूप बनता है। इस जाति में निषाद, पंचम बलि होते है, इस जाति में ऋषभ का दौर्बल्य है और विशेषतः लंधन है। कुछ लोगों ने ऋषभ को अंश समान कल्पित किया है अर्थात उपन्यास बनाया है। वे लोग षाड़व रूप का विधान इसी से करते है। इस जाति में भी षड़जमध्यमा के समान संचार होना चाहिए। इस जाति की साधना के विषय में नाट्यशास्त्रा में कहा हैः-

सागमपधनियोंऽशा अपन्यासाश्च। गनि न्यासौ।

प्रायेण धैवतनिषादौं यदांशो तदा पंचमों न्यासः

कदाचित्तु ऋषभोऽप्यपन्यासः .....

एतदेव मतङगाचाययर्यादिभिः ग्राम साधारणमित्युक्तमिति महामहेश्वरा।[17]

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

उपरोक्त का हिन्दी अनुवाद आ0 बृहस्पति द्वारा इस प्रकार किया गया है। ''कैशिकी में सगमपधनि अंश और अपन्यसास है गान्धार और निषाद न्यास है। जब कभी धैवत और निषाद अंश होते हैं, तब पंचम न्यास होता है। कभी ऋषभ भी अपन्यास होता है, लोप्यावस्था में नहीं अथवा पूर्णावस्था में होता है। कभी-2 लोप्य होने के कारण ऋषभ का दौर्बल्य होता है, ऋषभ के लोप से षाड़व और ऋषभ धैवत के लोप से औंड़व रूप बनता है। निषाद और पंचम बली है। पंचम और निषाद अपन्यास न होने की अवस्था में भी बली होते है। संचार षड़ज मध्यमा के समान है, कैशिकी के षड़जांश होने के कारण, षाड़जमध्यमा की अपेक्षा संचार कुछ न्युन है, क्योंकि षड़ज मध्यमा सप्तस्वरांश हैं। अंश के अनुसार मध्यम ग्रामिक मुच्छनाए पयोज्य है।

धैवती और आषर्भी के अतिरिक्त सभी नाम स्वर जातियों के संर्सग सें कैशिकी जाति का निर्माण हुआ, इसमे ग्राम संकर है। कैशिकी जाति स्वयं मध्यमग्रामीय है। इसमें ऋषभ ओर धैवत दोनों लोप्य है। दोनों की ही चतुश्रुतिक्ता अनिवार्य है। ऋषभ की चतुश्रुतिकता के कारण ऋषभ अत्यन्त दुर्बल एवं लंघय है। षडज ग्रामीय जातियों का अनुप्रवेश भी 'कैशिकी' में है अतः पंचम की चतुश्रुतिकता होनी चाहिए। अतः 'कैशिकी' नामक षड़ज साधारण एवं मध्यम साधारण का अवकाश भी इस जाति में है इसी अतिदेश के कारण तो 'कैशिक'', भिन्न कैशिक इत्यादि रागों में भली भान्ति स्थित है। मतंगाचार्य इत्यादि ने इसे ही 'ग्राम साधारण' कहा है। ऐसा महामहेश्वर आचार्य अभिनवगुप्त का मत है।[18]

भरत ने जाति में अंश स्वरों का महत्वपूर्ण स्थान माना है, तथा जाति के विनियोग एवं रसोत्पति में अंश स्वर को प्राथमिक माना है। कैशिकी के विषय में कहा है- ''कैशिकी धैवतांश तु वीभत्सेसभायानके।''[19]

अर्थातः धैवत अंश होने पर तो 'कैशिकी' जाति भयानक और वीभत्स रस में प्रयोज्य है।

एक ही जाति के कई अंश स्वर होते थे तथा जिस स्वरांश जाति का गायन होता था, उस विशिष्ट अंश स्वर से विशिष्ट रस की निष्पति होती थी अथवा अंश स्वर के अनुसार ही विभिन्न रसों में जातियों का विनियोग निहित था। उदहारणार्थः-

''गान्धारी रक्तागान्धान्धारर्योः सागमपनयोंऽशाः।

गान्धारेऽशे निषादेचाशं एवैते करूण रस प्रयोज्ये।[20]

अर्थातः- गान्धारी और रक्तागान्धारी में षाड़ज, गान्धार, मध्यम, पंचम और निषाद अंश होते हैं। गान्धार अथवा निषाद के अंश होने पर ही ये जातियां करूणरस से प्रयोज्य है।

दतिलम् में कैशिकी के विषय में अधिक विस्तार से वर्णन नहीं किया है। दतिलम् के टीकाकार कलिन्द ने श्लोक न. 88 का अनुवाद करते समय निशंक का विचार भी वयक्त किया है, यथाः

''कैशिकयामृशमोऽनशो न्यासौ तु द्विश्रुति स्मृतौ।

ऋषभों धैवतश्चैव हैयावस्याम् यथा कयम्''[21]

अर्थातः- ''कैशिकी जाति में ऋषभ को छोड़ शेष अंश स्वर है। गान्धार निषाद पर न्यास होता है। इसके आरोह में ऋषभ तथा अवरोह में धैवत वर्जित है। अतः जाति षाड़व-2 है।

निशंक जी ने रत्नाकर में कैशिक जनित मालव कैशिक राग (मालकोश) बताया है।'' कैशिकी जाति के निर्माण के विषय में दत्तिल कहते है।

''गान्धारी पंचमी चैव तथा गान्धारपंचमी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

आर्षभी धैवती वर्जाः कैशिकीमिति सङ्करा॥54॥[22]

अर्थातः- गान्धारी, पंचमी तथा गान्धारपंचमी यह तीनों जातिया आर्षभी धैवती से वर्जित होती है, तो एक संकर (मिश्र) जाति कैशिकी को उत्पन्न करती है।

मंतग मुनि प्रबीत बृहदेशी में कैशिकी जाति का वर्णन इस प्रकार हैः

''कैशिकयामृषशभान्येंऽशा निधावंशौ यदा तदा।

न्यासः पंचम एव स्यादन्यदा द्विश्रुति मतौ॥

अन्ये तु निगपन्यासान्निध्योंरंशयोर्विदुः॥2॥

रिलोपरिधलोपेन षाड़वोड़वितं मतम्।

रिरल्पो निपबाहुल्यमंशानां सगंतिमिर्थः॥22॥

षाड़वौड्डविते दृिष्टः क्रमात् पंचम धैवतौ।

षाड़जीवत् पंचपाण्यादि गान्धारादिस्तु मुर्च्छना॥

पंचमप्रेक्षणगतं ध्रुवायां विनियोजम॥23॥

अस्यां गानधारपंचमनिषाद न्यासाः। रिवर्ज्या शट सप्त वा स्वरा अपन्यासाः।''[23]

अर्थातः-

कैशिकी में ऋषभ को छोड़कर अन्य स्वर अंश होते है। जब निषाद और धैवत अंश होते है तो पंचम ही न्यास होता है। अन्यथा द्विश्रुतिक स्वर (गान्धार और निषाद) न्यास होते है, अन्य आचार्य निषाद और धैवत के अंश होने पर निषाद, गान्धार तथा पंचम इन तीनों को ही न्यास मानते है, ऋषभ तथा ऋषभ, धैवत के लोप से षाड़व और औड़व रूप बनते है। ऋषभ का अल्पत्व तथा निषाद पंचम की बहुलता और अंश स्वर की परस्पर होती है, जब पंचम अंश होता है तो षाड़व रूप तथा जब धैवत अंश होता है तो औड़व रूप नहीं होता। इसमें पंचपाणि इत्यादि ताल, षाड़जी के समान है।

बृहदेशी के पश्चात् जिसे भारतीय संगीत का आधार ग्रन्थ मानते है उसकी रचना ''संगीत रत्नाकर'' के नाम से शार्ङगदेव द्वारा 13वीं शतीब्दी में हुई, जिसमें जाति तथा रागों का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है।

संगीत रत्नाकर में जो वर्णन कैशिकी जाति का मिलता है वह मतंग की बृहदेशी से ही लिया गया है। दोनों ग्रन्थों में इस जाति का वर्णन बिल्कुल एक सा ही है यथा

''कैशिकयामृषभान्येऽशा ..... रिवर्ज्याः शटसप्त वा स्वरा अपन्यासाः।[24]

संगीतपारीजात तथा संगीत दपर्ण में जाति का विस्तृत वर्णन नहीं किया है केवल इनके नाम मात्रा ही दिए है। रामामात्य कृत स्वरमेलकलानिधी में जाति का वर्णन बिल्कुल नहीं किया गया है। अन्य पश्चातवर्ती ग्रन्थकारों ने यदि जाति का वर्णन किया है तो उन्होंने भी वही वर्णित किया है जो भरत, मंतग तथा शाङर्गदेव ने पूर्व में ही किया है।

के0 वासुदेव शास्त्री द्वारा रचित 'संगीत शास्त्र' में कैशिकी जाति के लक्षण इस प्रकार है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

''कैशिकी जाति में निषाद और धैवत अंश होते है, पंचम न्यास रहना चाहिए। इस विषय में मतान्तर भी है कि नि और ग अंश होने पर नि ग और प इन तीनो को न्यास स्वर रहना चाहिए। ऋषभ अल्पस्वर है निषाद और पंचम बहुल स्वर है, सारे अंश स्वरों में अर्थात सा, ग, म, प, ध, नि, में दो-2 स्वरों का प्रयोग साथ-2 होता है, ताल कला और गीति षाड़जी के समान है। इसका प्रयोग पांचवे दृष्य में धुरवा गान में होता है।[25]

मतंग किन्नरी पर गान्धारादि मुच्छना स्थापित करने से कैशिकी की विभिन्न अवस्थाएं ये होगी[25]

पर्दे	स्वर	**1. गान्धारांश कैशिकी**
0	ग	चिकारियां गान्धार में मिलाने मेरू से मन्द्र
1	म	सातवें पद्रे से मध्य तथा चैदहवें पद्रे से तार
2	प	स्थान की प्राप्ति होगी। 18वें पद्रे पर षड़ज
3	ध	और ऋषभ भी प्राप्त किये जा सकतें हैं। मन्द्र
4	नि	स्थान में गान्धार और निशाद दोनां े न्यास स्वर
5	सा	मिल जाऐगे।
6	रे	
7	ग	
8	म	**2 मध्यमांश कैशिकी**
9	प	चिकारियां मध्यम में मिलने पर पहले पद्रे से
10	ध	मन्द्र आठवे से मध्य और पंद्रहवें पद्रे से तार
11	नि	स्थान की प्राप्ति होगी। तार स्थानीय सा, रे,
12	सा	ग अठारवे पद्रे पर प्राप्त किये जा सकतें है।
13	रे	
14	ग	
15	म	
16	प	**3. पंचमांश कैशिकी**
17	ध	चिकारियां पंचम में मिलाने पर दुसरे पर्दे से
18	नि	मन्द्र नवें से मध्य तथा सोलहवें पर्दे से तार स्थान की प्राप्ति होगी। तार स्थानीय सा, रे, ग भी अन्तिम पर्दे पर प्राप्त किये जा सकते है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

धैवातांश कैशिकी

चिकारियां धैवत में मिलाने पर तीसरे पर्दे पर से मन्द्र दसवें से मध्य और सत्राहवें से तार स्थान की प्राप्ति होगी। तार स्थानीय सा, रे, ग, भी अन्तिम पर्दे पर प्राप्त किये जा सकते है। इस अवस्था में न्यास स्वर 'पंचम' मंद्र एवं अति मन्द्र स्थान में भी मिलेगा।

निषादांश कैशिकी

चिकारियां निषाद में मिलाने पर चैथे पर्दे से मंद्र ग्यारहवें से मध्य और अठारहवें से तार स्थान की प्राप्ति होगी जिस पर तार स्थानीय सा, रे, ग, म भी प्राप्त किये जा सकते है। इस अवस्था में न्यास 'पंचम' की मंद्र एंव मन्द्रतम अवस्थाएं प्राप्त होगी।

षड़जांश कैशिकी

चिकारियां षाड़ज मे मिलाने पर पांचवे पर्दे से मध्य और बारहवें पर्दे से तार स्थान की प्राप्ति होगी मेरू से चैथे पर्दे तक मन्द्र स्थानीय पांच स्वर मिलेगें जिन में गान्धार और निषादन्यास स्वर भी है।

बृहदेशी में यह कैशिकी जाति का जो प्रस्तार मिलता है यह प्रस्तार 'संगीतरत्नाकर' तथा 'भरत का संगीत सिद्धान्त' में वर्णित प्रस्तार से थोड़ा सा भिन्न है। 'भरत का संगीत सिद्धान्त' तथा संगीत रत्नाकर में स्वर प्रस्तार बिल्कुल एक सा ही मिलता है जिसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि आचार्य बृहस्पति ने यह प्रस्तार 'संगीत रत्नाकर से ही लिया है! आचार्य बृहस्पति ने कैशिकी जाति का प्रस्तार ताल सहित वर्णित किया है जबकि 'संगीतरत्नाकर भाग-1, में इसका प्रस्तार स्वर एवं पद दोनों के साथ ही किया है, 'बृहदेशी में केवल स्वर ही दर्शाए गए है पद एवं ताल नही है।

प्रस्तुत शोधपत्र कैशिकी जाति का सैद्धान्तिक विवरण था। इन जातियों का अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण व प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि इन्हीं जातियों से आधुनिक रागों का प्रार्दुभाव हुआ है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विषय का अध्ययन व विश्लेषण विषय की गंभीरता का परिचायक होता है जो अमुक क्षेत्र में उच्च अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ सूची

1 भरत का संगीत सिद्धांत, आ0 केलाश चन्द्र देव बृहस्पति-पष्074
2 बृहदेशी भाग-2 मतंग {प्रो0 प्रेम लता शर्मा}-पृ092
3 बृहस्पति भाग-2 मतंग {प्रो0 प्रेम लता शर्मा} पृ 08
4 संगीताजंली भाग-6, पं0 ओम्कार नाथ ठाकुर-पृ02
5 दत्तिलम्, दत्तिल (कलिन्द)-पृ0-14
6 संगीत पारीजात, अहोबल (कलिन्द)-पृ084
7 संगीताजली भाग-6, पं0 ओम्कार नाथ ठाकुर-पृ013
8 बृहदेशी भाग-2, मतंग (प्रो डा0 प्रेमलता शर्मा-पृ02
39 बृहदेशी भाग-2, मतंग (प्रो डा0 प्रेमलता शर्मा-पृ02पृ02
10 संगीतान्जली भाग-6 ओम्कार नाथ ठाकुर-पृ013
11 दतिलम् दतिल (कलिन्द्र)-पृ014
12 दतिलम् दतिल (कलिन्द्र)-पृ014
13 दतिलम्, दत्तिल (कलिन्द्र)-पृ015
14 संगीत पारीजात पृ084 अहोबल्, (कलिन्द्र)-पृ0-84
15 संगीत दपर्ण-दामोदर (पृ0 विश्वंभरनाथ भट्ट)-69
16 नाट्य शास्त्रा भरतमुनि 28वां अध्याय (स्वरा ध्याय) (आ0बृहस्पति)-पृ0142
17 नाट्य शास्त्रा (स्वराध्याय) भरतमुनि (आ0के0सी0डी0बृहस्पति) पृ0 142-143

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

18 नाट्य शास्त्रा (स्वराध्याय) भरत मुनि (आ0के0सी0 बृहस्पति) पृ0143-144
19 नाट्य शास्त्रा 28वां अध्याय, भरत (आ0के0सी0डी0 बृहस्पति) पृ0149
20 नाट्य शास्त्रा 28वां अध्याय, भरत (आ0के0सी0डी0 बृहस्पति) पृ0148
21 दत्तिलम् दत्तिल (कलिन्द)-पृ014
22 दत्तिलम् दत्तिल (कलिन्द) भरत (आ0के0सी0डी0 बृहस्पति) पृ014
23 बृहदेशी भाग 2, (प्रो0डा0 प्रेमलता शर्मा)-पृ062
24 संगीत शास्त्र के0 वासुदेव शास्त्री -पृ054
25 भरत का संगीत सिद्धांत, आ0के0सी0डी0बृहस्पति पृ9124